बी.एस.एस. — Bakhar Sanshodhan Sangraha

BHARAT SATYA SAMPURNA · HISTORICAL RESEARCH DOSSIER

स्वराज्य में किलों का भू-सामरिक महत्त्व

मराठा दुर्ग-व्यवस्था में रक्षा स्थापत्य एवं जल-प्रबंधन

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥

भगवद्गीता १८.७८ — इस दस्तावेज़ का मार्गदर्शक श्लोक

टियर २ · द्वितीयक शैक्षणिक स्रोत

स्रोत: Raju Chatarsing Pardeshi, "Geo-Strategic Importance of Forts in Swarajya," *Shivcharitra Pushpanjali Khand-2* (Special Issue, Vol. 13, No. 2, June 2024), ISBN 978-81-963502-0-8, pp. 113–123. Akhil Bhartiya Shri Shivcharitra Sahitya Sammelan — Nutan Maratha Mahavidyalaya, Jalgaon & Itihas Prabodhan Sanstha, Maharashtra.

भारत सत्य सम्पूर्ण (बी.एस.एस.) शोध संग्रह हेतु तैयार।

१ किलों की सामरिक स्थिति एवं दुर्ग-निर्माण अभियान

स्वराज्य की सामाजिक-राजनीतिक तथा सैन्य संरचना की रीढ़ किले थे — ये एक साथ रक्षा-गढ़, प्रशासनिक केंद्र, सार्वभौमिकता के प्रतीक और क्षेत्रीय नियंत्रण के साधन के रूप में कार्य करते थे। छत्रपति शिवाजी महाराज ने पहचाना कि सह्याद्रि की दुर्गम भूमि को ही एक प्राकृतिक दुर्ग में बदला जा सकता है, और उन्होंने पारंपरिक मराठी निर्माण-कला के साथ इस्लामी तथा यूरोपीय स्थापत्य के तत्वों को जोड़कर किलों का सुदृढ़ जाल खड़ा किया।

प्रत्येक किले का प्रवेश-द्वार सबसे अधिक सुरक्षित स्थान होता था। रायगढ़ के महाद्वार जैसे प्रवेश-द्वार कई स्तरों की सुरक्षा के साथ बनाए गए थे — हाथियों व धावा-अस्त्रों को रोकने वाले कीलदार दरवाज़े, चल-पुल (drawbridge), और आने-जाने वालों पर नज़र रखने वाले पहरेदार-कक्ष। स्थानीय बेसाल्ट चट्टान से बनी और मिट्टी-कार्य से सुदृढ़ की गई दीवारें व बुर्ज आक्रमण के विरुद्ध मुख्य अवरोध बनते थे, जबकि किले भर में बिखरे प्रहरी-मीनारों से पहरेदारों को शत्रु-सेना को दूर से ही देखकर समय पर चेतावनी देने तथा रक्षा-व्यवस्था संगठित करने में सहायता मिलती थी।

२ किलों की जल-प्रबंधन प्रणालियाँ

किसी किले की दीर्घकालीन घेराबंदी सहने की क्षमता मुख्यतः जल-सुरक्षा पर निर्भर करती थी। मराठा अभियंताओं ने वर्षा-जल संग्रहण हेतु बेसाल्ट पत्थर और चूने के गारे से बनी टंकियों, जलाशयों तथा नहरों की अत्यंत कुशल प्रणाली विकसित की।

नालियों व नियंत्रण-द्वारों (sluice gates) के माध्यम से पीने, भोजन बनाने तथा सिंचाई हेतु जल-वितरण नियंत्रित किया जाता था, जबकि पर्वतीय झरनों से किले के भीतरी भाग तक जल पहुँचाने वाली जलवाहिकाएँ काफी दूरी तक बनाई जाती थीं। इस जल-अभियांत्रिकी के कारण सुसज्जित किला महीनों तक घेराबंदी सहन कर सकता था, जिससे शत्रु की भूखा रखकर आत्मसमर्पण कराने की रणनीति विफल हो जाती थी।

मुख्य विशेषताएँ: वर्षा-जल आधारित टंकियाँ व जलाशय · न्यूनतम रिसाव हेतु चूना-बेसाल्ट निर्माण · नाली-द्वार आधारित वितरण तंत्र · झरनों से लंबी दूरी की जलवाहिकाएँ · रायगढ़, सिंहगढ़, प्रतापगढ़ आदि किलों पर प्रलेखित।

§ टियर वर्गीकरण एवं स्रोत-टिप्पणी

टियर २ — द्वितीयक शैक्षणिक संश्लेषण

यह दस्तावेज़ राजू चतरसिंग परदेशी के २०२४ के सम्मेलन-शोधपत्र पर आधारित है, जो स्वयं सरकार, सेन, बेंद्रे, मुजुमदार, कुलकर्णी जैसे स्थापित द्वितीयक स्रोतों पर आधारित शैक्षणिक संश्लेषण है। मूल शोधपत्र में कोई नया प्राथमिक अभिलेखीय दस्तावेज़ प्रस्तुत नहीं किया गया है। बी.एस.एस. साक्ष्य-ढाँचे में इसे टियर २ में वर्गीकृत किया गया है — उद्धरण-योग्य विश्वसनीय शैक्षणिक संश्लेषण, किंतु मूल दस्तावेज़ों, शिलालेखों व समकालीन पत्रों जैसे टियर १ प्राथमिक स्रोतों से भिन्न।

चयनित संदर्भ (मूल शोधपत्र में उद्धृत)

1. R.C. Dhere & Joshi, *P.S. Adnyapatra*, Bora and Company Publishers, Mumbai, 1960.
2. S.N. Sen, *Military System of the Marathas*.
3. P.V. Kate, *Marathyancha Itihas*, Kailash Publications, Aurangabad, 1999.
4. R.C. Mujumdar, *The History & Culture of the Indian People — The Maratha Supremacy*.
5. J.N. Sarkar, *House of Shivaji*, Calcutta, 1940.
6. V.C. Bendre, *Biography of Shri Chhatrapati Shivaji Maharaj*.

भारत सत्य सम्पूर्ण संग्रह हेतु संकलित — पिता की हस्तलिखित डायरियों की शोध-यात्रा का अगला चरण।